ISSN 2582 – 8606

अर्द्धवार्षिक पत्रिका

फिरकी बच्चों की

Firkee Bachchon Ki

वर्ष 7 अंक 1 जनवरी-जून 2025

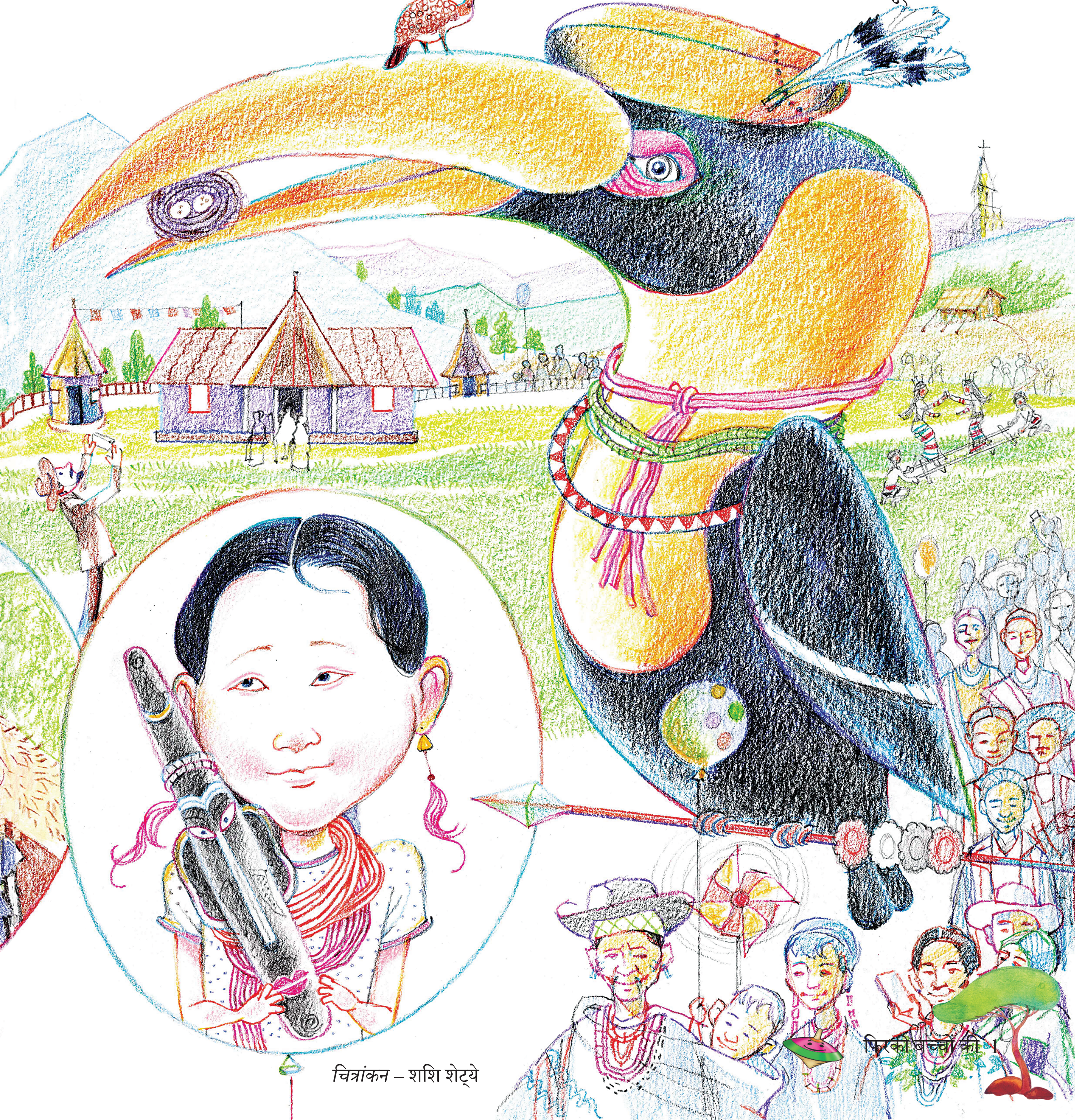

चित्रांकन – शशि शेट्ये

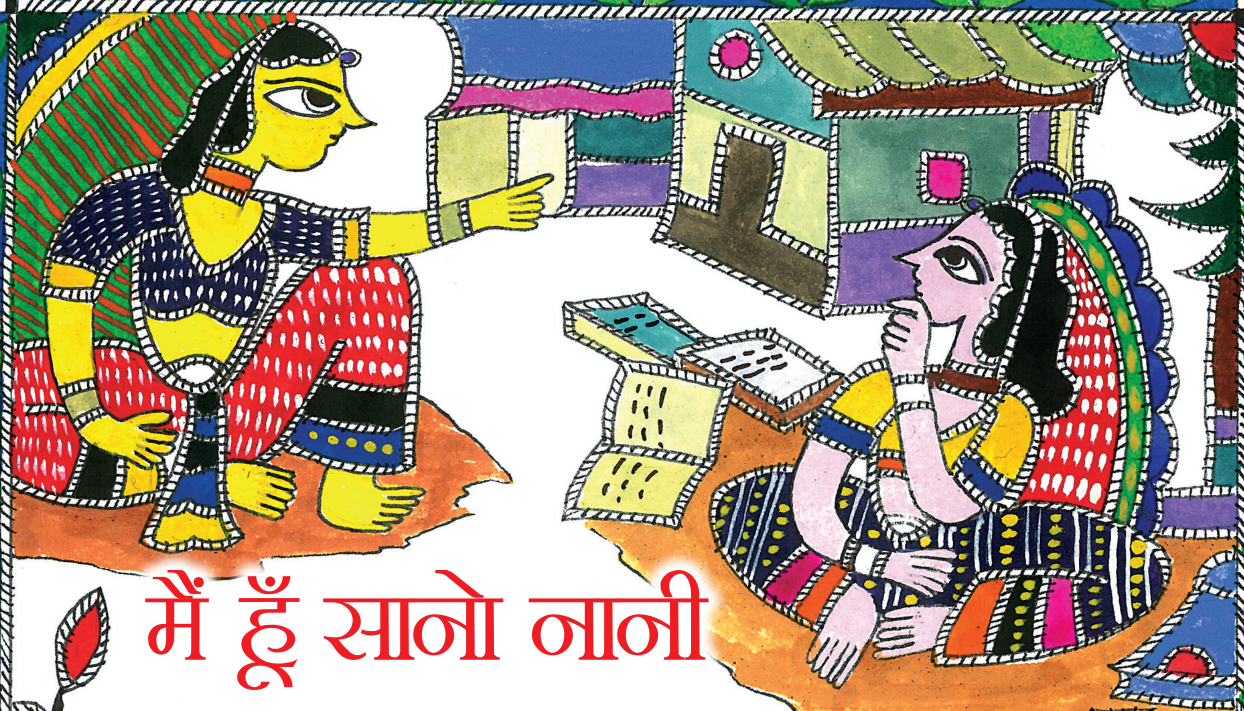

मैं हूँ सानो नानी

मैं हूँ सानो नानी,
पढ़ने-लिखने की बानी।

आमा के संग बगिया जाती,
सुनती नई कहानी।

घर में हैं पाठा-पाठी,
मने-मने मैं उन्हें बुलाती।

मने-मने कर आते,
दोनों पाठा-पाठी,
मने-मने फिर मैं भी गाती।

सुरेश शर्मा – सिक्किम

चित्रांकन – सच्चिदानंद साह

सानो नानी = छोटी बच्ची
बानी = आदत
आमा = माँ

पाठा-पाठी = बकरा, बकरी
मने-मने = बकरी का में-में करना

इस अंक में

मैं हूँ सानो नानी 2

मछली और केकड़ा 4

बड़ा बाघ और छोटा बाघ 6

उसने सोचा... 8

याक के साथ 10

मुन्नी और बन्दर 11

बीचों-बीच 12

पत्ता और ढेला 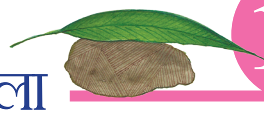 14

The Octopus and Starfish 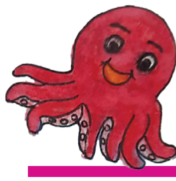 16

कुछ हम लिखें, कुछ तुम लिखो! 18

लोरी 19

बकरी की चतुर चाल 20

देखो, मैंने क्या बनाया! 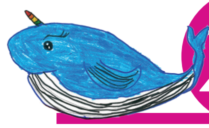 22

मेले का सफ़र 24

मछली और केकड़ा

एक मछली और केकड़े में बहुत अच्छी दोस्ती थी। दोनों साथ मिलकर खेलते और रहते थे। एक दिन अचानक तूफ़ान आया। उस तूफ़ान में मछली और केकड़ा दोनों बिछुड़ गए।

मछली और केकड़ा दोनों एक-दूसरे को खोजते हुए पानी के ऊपर आ गए। उसी समय वहाँ एक मछुआरा आया। मछुआरे को मछली दिखी।

वह मछली को पकड़ने के लिए जाल फेंकने वाला ही था कि केकड़े ने उसे देख लिया। केकड़ा ज़ोर से केकड़ा-केकड़ा चिल्लाने लगा।

मछुआरा केकड़े की तरफ भागा। अब मछली ने जब मछुआरे को केकड़े की तरफ जाते देखा तो वह मछली-मछली चिल्लाने लगी। तो मछुआरा मछली की तरफ भागा। जब मछुआरा मछली की तरफ जाने लगा तो केकड़ा फिर चिल्लाने लगा। मछुआरा सिर पकड़कर बैठ गया। इस तरह दोनों दोस्तों ने मछुआरे से एक-दूसरे की जान बचाई। अब वे पहले की तरह ही साथ खेलने और रहने लगे।

(नागालोक कथा)
बी.पी. फिलीप, डिमापुर
चित्रांकन – भार्गवी मोहन

बड़ा बाघ और छोटा बाघ

एक बार की बात है। छोटा बाघ रास्ते से जा रहा था। बड़ा बाघ भी उसी रास्ते से जा रहा था। बड़े बाघ ने सोचा, "आज छोटे बाघ से मज़े लिए जाएँ।"

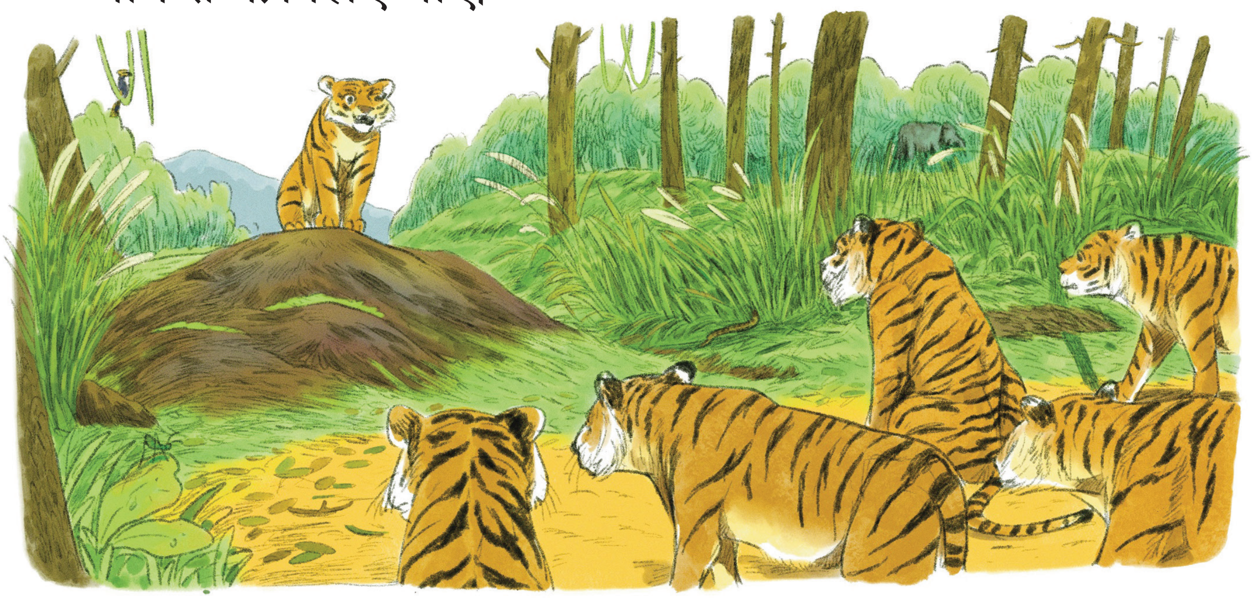

बड़े बाघ ने बिना सोचे-समझे छोटे बाघ को धक्का दे दिया। छोटे बाघ को यह बात बुरी लगी। वह बड़े बाघ को कुछ नहीं कह पाया, क्योंकि वह बाघ खूब बड़ा था। छोटे बाघ ने एक योजना बनाई।

एक दिन उसने सभी छोटे बाघों को अपने साथ चलने को कहा।

एक दिन बड़ा बाघ कहीं जा रहा था। उसे लगा कि कोई उसके पीछे-पीछे आ रहा है। अचानक बड़े बाघ ने पीछे पलटकर देखा। बहुत सारे-सारे छोटे-छोटे बाघ उसके पीछे-पीछे आ रहे हैं। झुंड में इतने सारे छोटे बाघों को देखकर वह डरकर भाग गया।

गुनगुन बसुमतारी, कक्षा 5,
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोकराझार, असम
चित्रांकन – हबीब अली

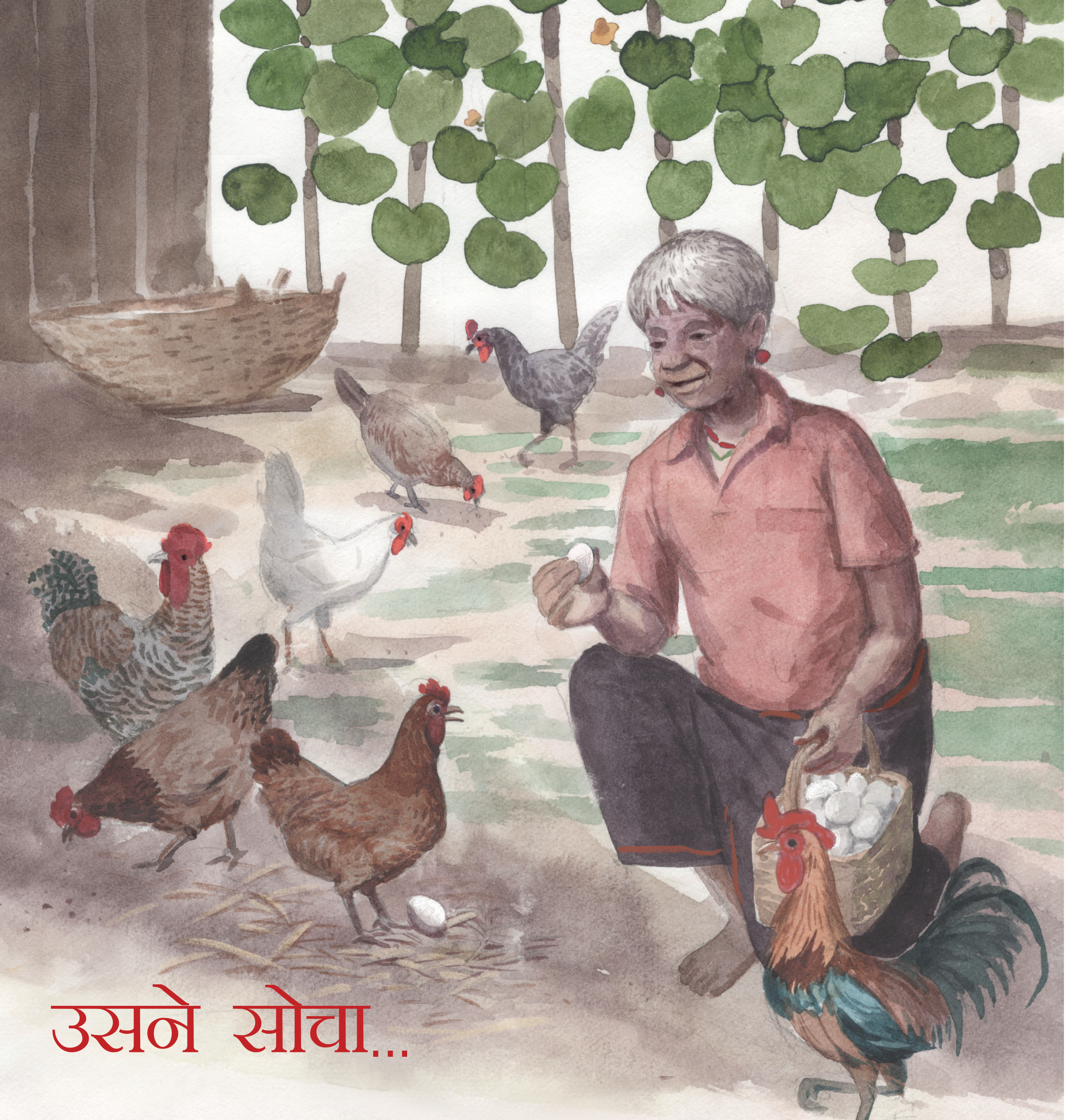

उसने सोचा...

एक बार की बात है। एक गाँव में एक आदमी अपनी गाय के साथ रहता था। वह गाय का दूध बेचकर अपना गुज़ारा करता था। एक दिन उसने सोचा, मैं अपनी गाय का दूध बेच कर बहुत कम पैसे कमा पाता हूँ, तो इतने कम पैसे से मेरा खर्च कैसे चलेगा?

उसने सोचा, मैंने घर के भाड़े के लिए जो पैसे जमा किए हैं उससे एक दूसरा जानवर खरीद लूँगा। अगले दिन जाकर उसने उस पैसे से एक मुर्गी खरीद ली। मुर्गी के अंडे को बेचकर उसने दुगना पैसा कमाया। उसने उन पैसों से अपना घर का भाड़ा भी दे दिया और खुशी-खुशी रहने लगा।

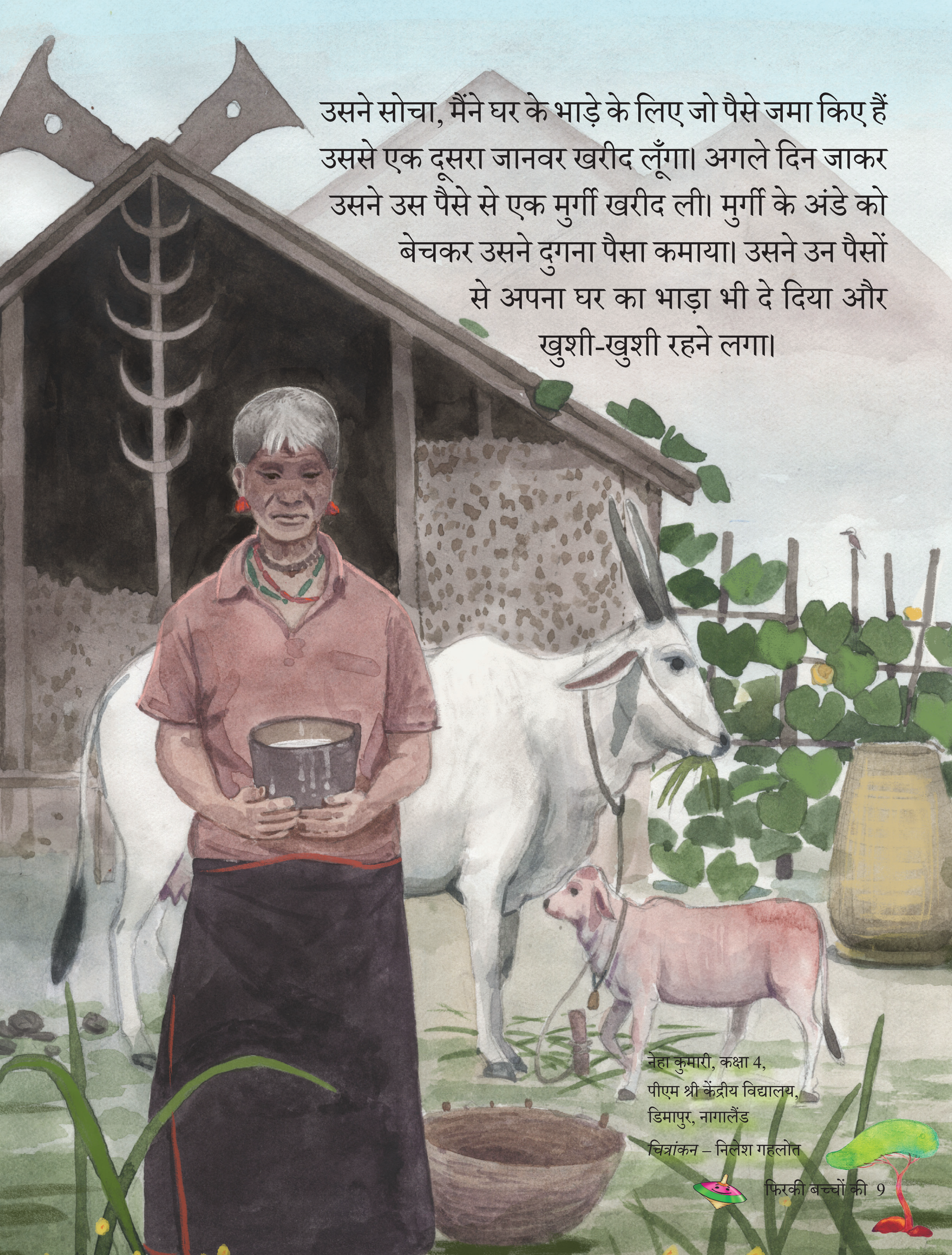

नेहा कुमारी, कक्षा 4,
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय,
डिमापुर, नागालैंड
चित्रांकन – निलेश गहलोत

याक के साथ

मंजुला माथुर
चित्रांकन – भार्गवी मोहन

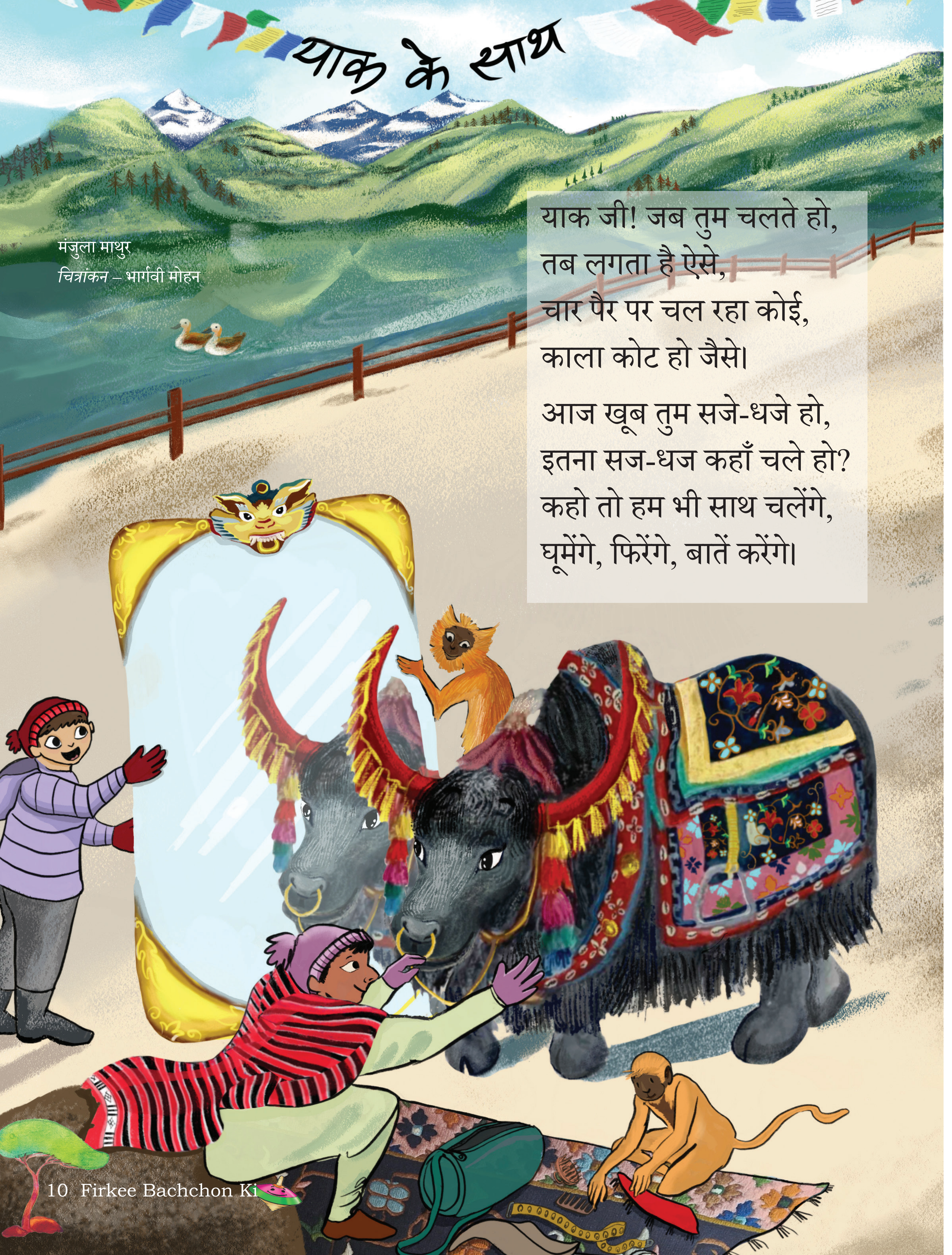

याक जी! जब तुम चलते हो,
तब लगता है ऐसे,
चार पैर पर चल रहा कोई,
काला कोट हो जैसे।

आज खूब तुम सजे-धजे हो,
इतना सज-धज कहाँ चले हो?
कहो तो हम भी साथ चलेंगे,
घूमेंगे, फिरेंगे, बातें करेंगे।

मुन्नी और बन्दर

एक लड़की थी। उसका नाम **मुन्नी** था। मुन्नी **को स्कूल** जाना **पसन्द था**। एक दिन वह स्कूल जा रही थी। रास्ते में एक **बन्दर** मिला। बन्दर ने खों खों किया, दाँत दिखाये। मुन्नी डर गई। ऐसा रोज़ होने लगा। एक दिन मुन्नी ने सोचा कि बन्दर **को केले** दे दूँगी। और फिर आराम से स्कूल जाऊँगी। मुन्नी ने ऐसा ही किया।

श्रेया, कक्षा 4,
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय,
कोकराझार, असम

चित्रांकन – सिमरन कौर

बीचों-बीच

चित्रांकन – संतोष मिश्रा

पत्ता और ढेला

लक्ष्मीन्द्र कुमार सिन्हा,
गुवाहाटी, असम

चित्रांकन – सुनीता

बहुत पहले की बात है। एक आदमी बाँस के झुरमुट के पास कुदाल से मिट्टी की खुदाई कर रहा था। अचानक बाँस का एक सूखा पत्ता मिट्टी के ढेले पर आ गिरा। पत्ते ने ढेले से दोस्ती कर ली और दोनों ने मुसीबत में एक-दूसरे की सहायता करने का वादा किया। जब भी बारिश आती थी, तब पत्ता ढेले को छिपा लेता था ताकि उसे भीगने और नष्ट होने से बचा सके। इसी तरह तूफ़ान आने पर ढेला पत्ते के ऊपर बैठ जाता ताकि तेज़ हवा उसे उड़ाकर दूर ले न जाए। इस तरह पत्ता और ढेला एक-दूसरे की मदद करते और साथ-साथ रहते।

(मणिपुरी लोककथा)

Once upon a time, there was a Baby Octopus and a Baby Starfish. They were best friends. They played all day and went to bed with their moms.

One day while they were playing, suddenly, a Big Shark came. The Big Shark said, " Hi! My name is Dom. I will eat you now."

Aradhya Das, Class 5,
PM SHRI Kendriya Vidyalaya,
Kokrajhar, Assam
Illustration – Vineeta Mattoo

The Octopus and Starfish

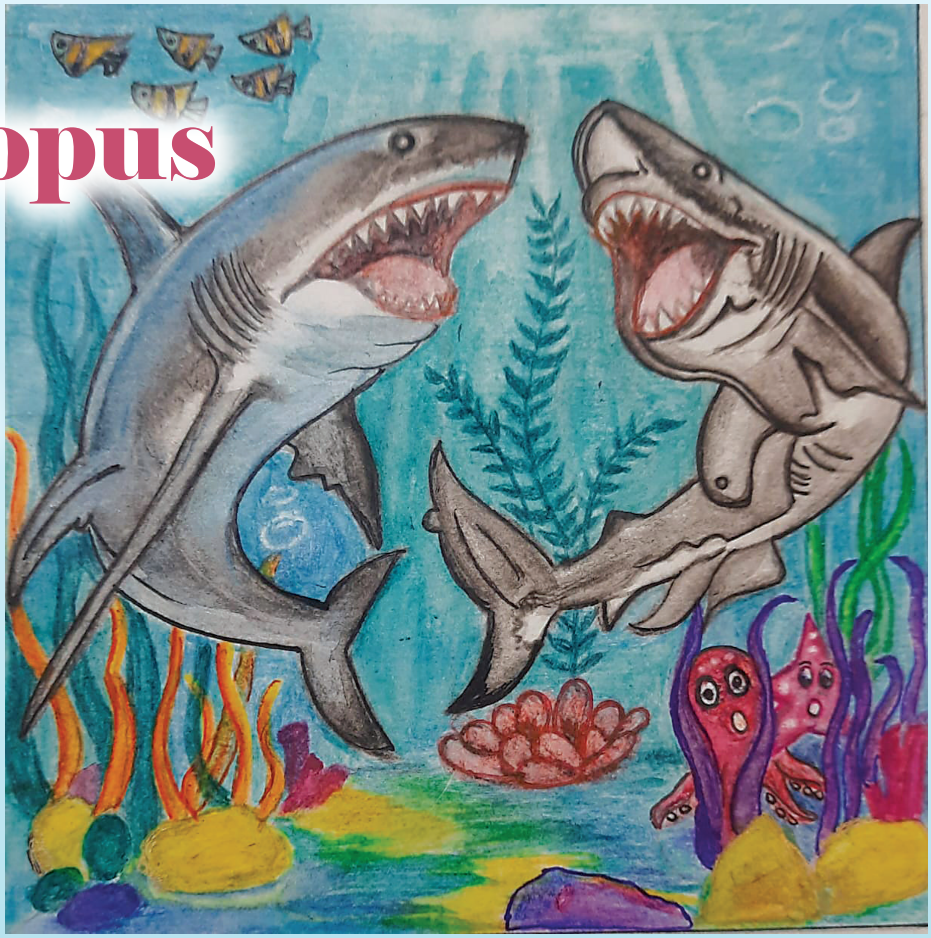

Just then, a Good Shark came and said "I will save you from the Bad Shark."
Then, they two began fighting. The Bad Shark gave up. Good Shark was the winner.

कुछ हम लिखें, कुछ तुम लिखो!

खिलने का खेल

धरती पर खिली धूप
धूप में खिली धरती।
क्यारी में खिले फूल
फूलों से खिली ......।

रात में खिले तारे
तारों से ....।

राग में खिले सुर
सुरों में ....।

चेहरे पर खिली हँसी
.... चेहरा।

कविता में खिले शब्द
शब्दों में ....।

श्याम सुशील

चित्रांकन – शुभम लखेरा

लोरी

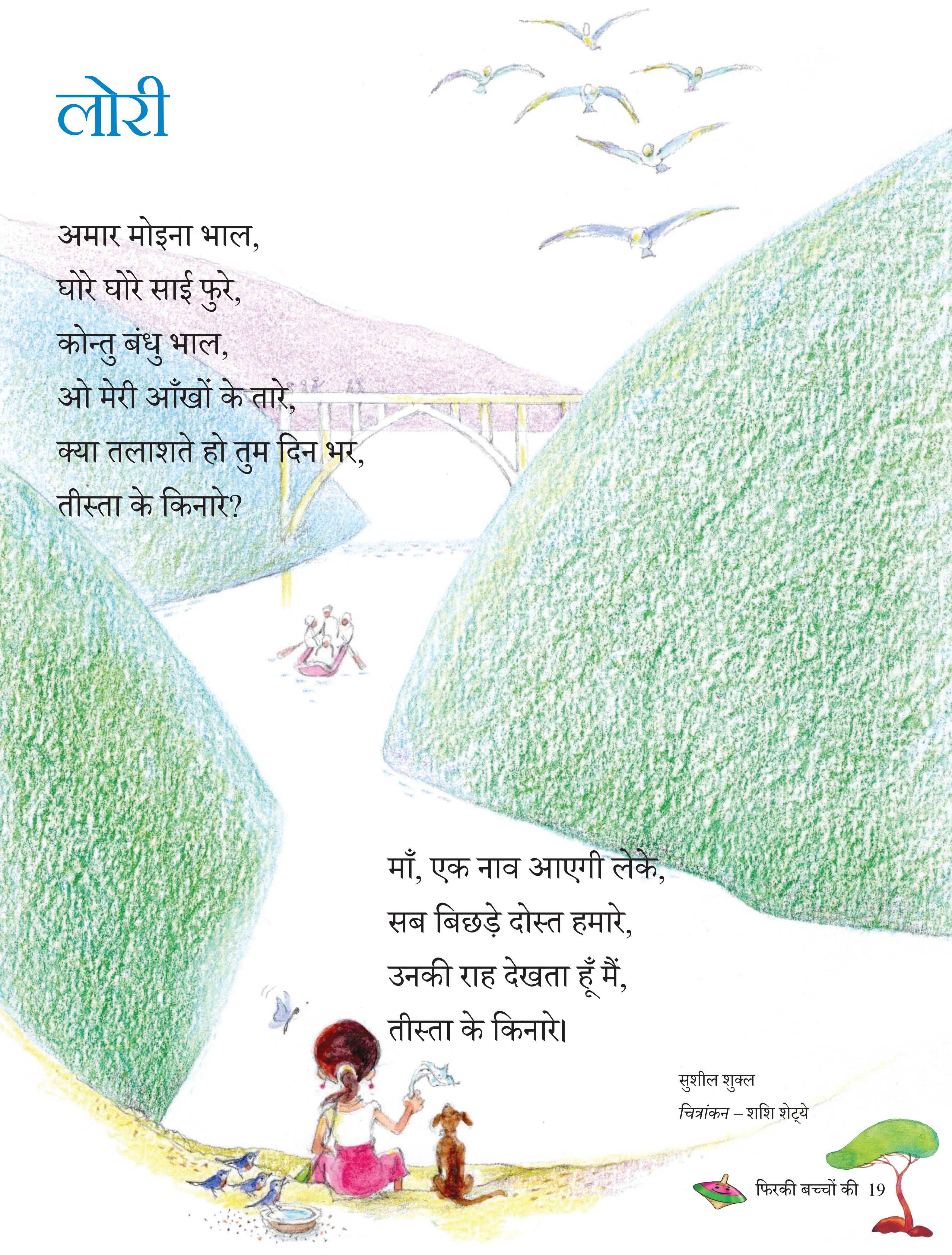

अमार मोइना भाल,
घोरे घोरे साई फुरे,
कोन्तु बंधु भाल,
ओ मेरी आँखों के तारे,
क्या तलाशते हो तुम दिन भर,
तीस्ता के किनारे?

माँ, एक नाव आएगी लेके,
सब बिछड़े दोस्त हमारे,
उनकी राह देखता हूँ मैं,
तीस्ता के किनारे।

सुशील शुक्ल
चित्रांकन – शशि शेट्ये

बकरी की चतुर चाल

एक बकरी शहद ले कर जा रही थी। तभी बहुत ज़ोर से बारिश के साथ-साथ तूफ़ान भी आ गया। बकरी बहकर एक गुफा के अंदर चली गई। उसने देखा कि गुफा के अंदर शेर और लोमड़ी भी थे। बकरी को देखकर शेर बोला— बकरी, शहद मुझे दे दे। बकरी ने चतुराई के साथ कहा कि अगर तुम शहद को भालू की पूँछ के साथ खाओगे तो तुम्हारे अंदर हाथी से भी ज़्यादा ताकत आ जाएगी। शेर अधिक ताकतवर बनने के चक्कर में भालू की पूँछ लेने चला गया। अब बची लोमड़ी।

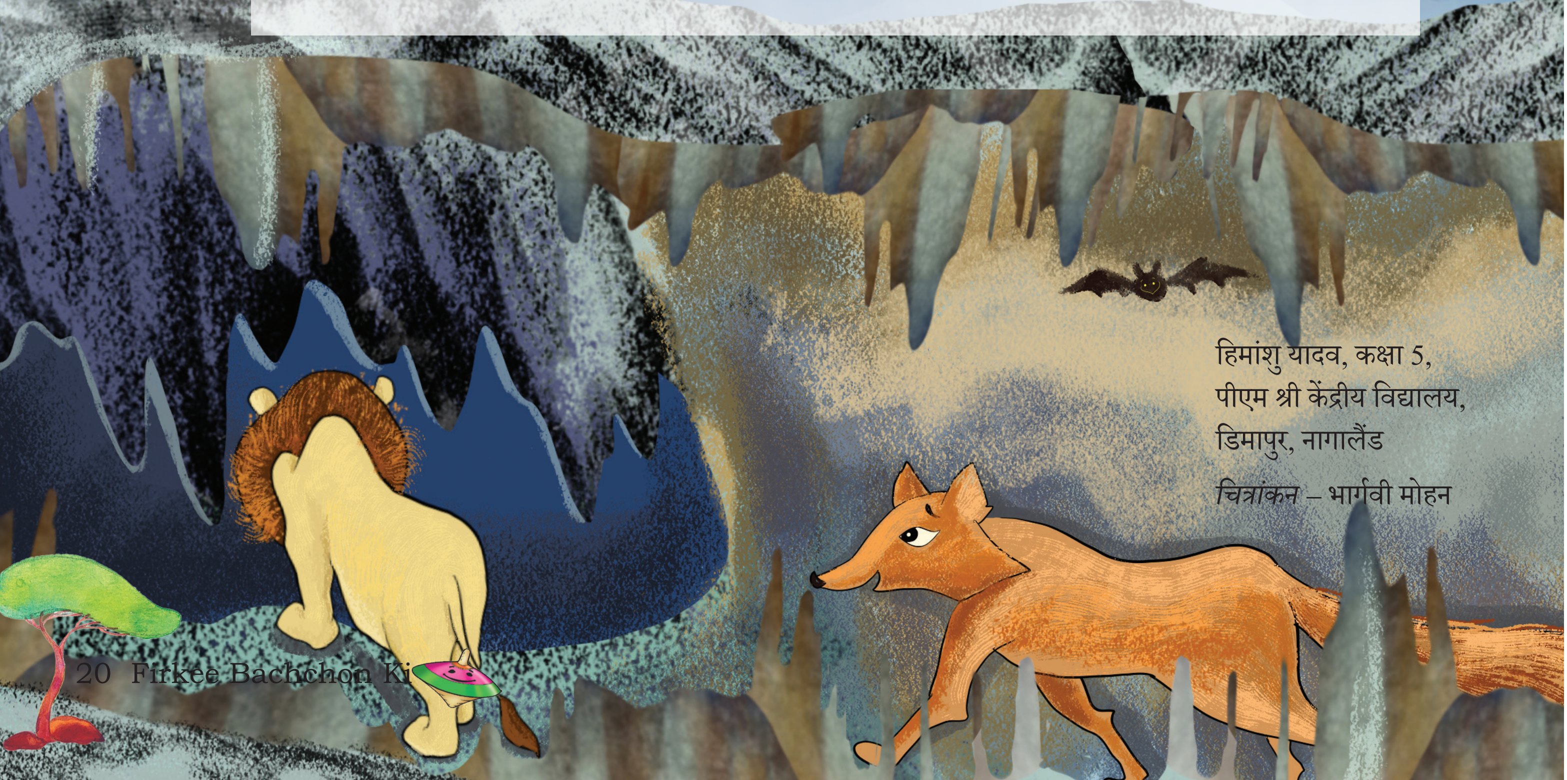

हिमांशु यादव, कक्षा 5,
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय,
डिमापुर, नागालैंड

चित्रांकन – भार्गवी मोहन

बकरी ने लोमड़ी से कहा कि मैं तो शेर को बताना ही भूल गई कि शहद को भालू की पूँछ के साथ नहीं खाना है, उसे तो लोमड़ी की पूँछ के साथ खाना है। यह सुनकर लोमड़ी भी गुफा से बाहर भाग गई। इस तरह बकरी ने शेर और लोमड़ी से अपनी जान बचा ली।

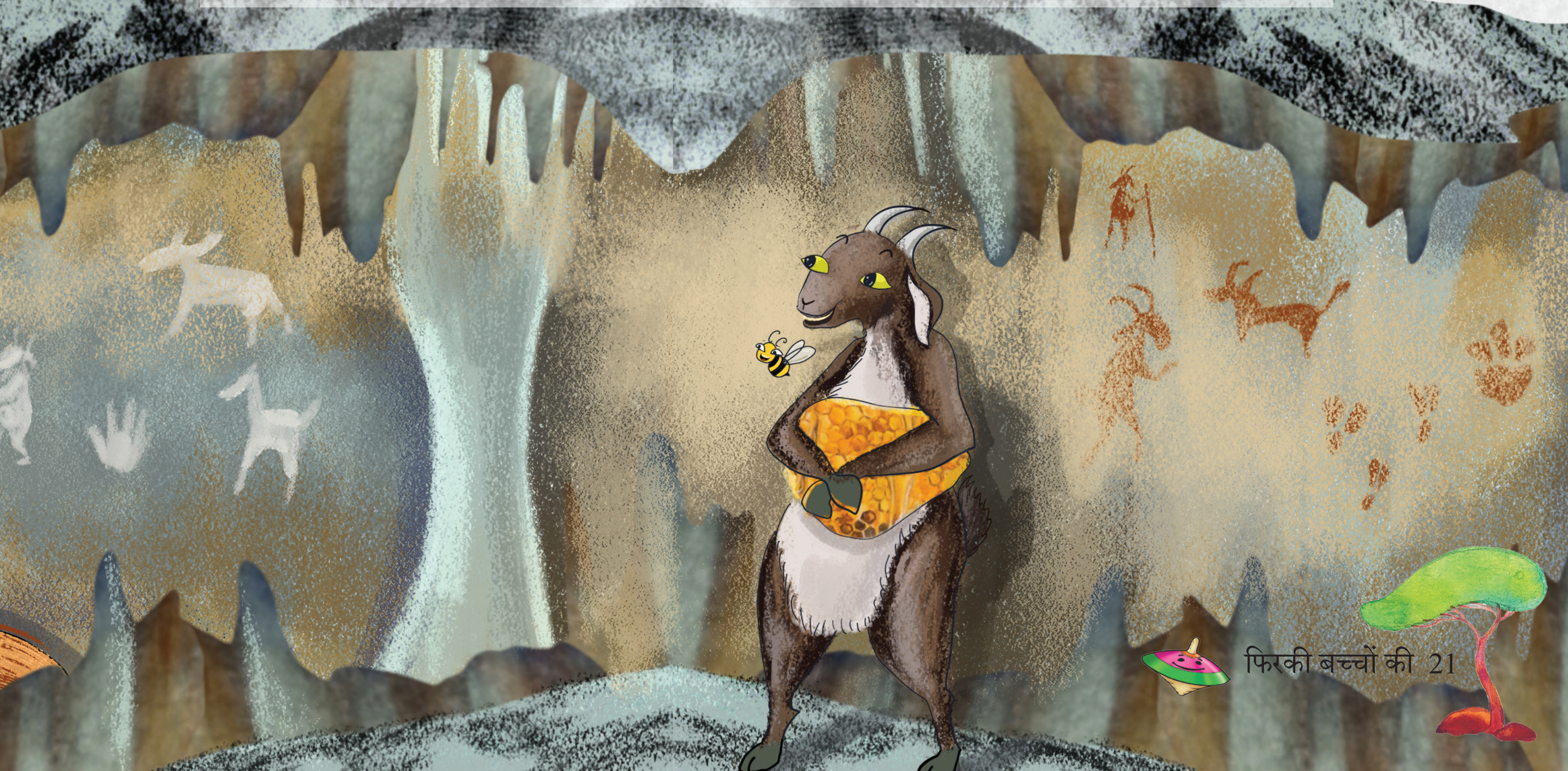

देखो, मैंने क्या बनाया!

प्रतीक – कक्षा 4, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय डिमापुर, नागालैंड

समीरा बसुमतारी – कक्षा 4, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कोकराझार, असम

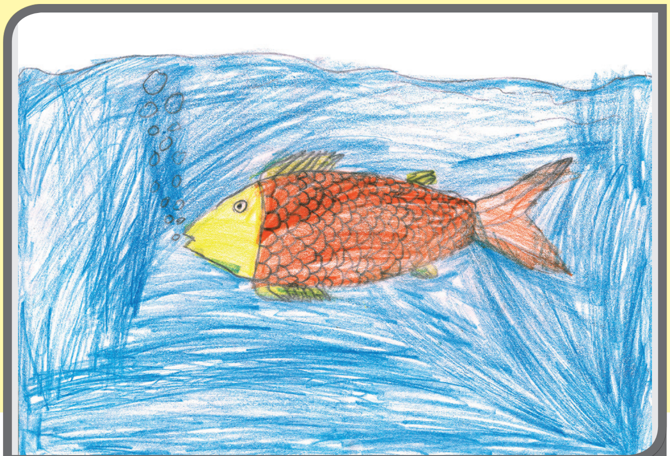

हिरन्या रॉय – कक्षा 2, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कोकराझार, असम

आकर्ष राज – कक्षा 5, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय डिमापुर, नागालैंड

देबांशु रॉय – कक्षा 3, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कोकराझार, असम

आराध्या देबनाथ – कक्षा 4, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय डिमापुर, नागालैंड

प्रियंकर सरकार – कक्षा 3, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कोकराझार, असम

कालितो – कक्षा 4, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय डिमापुर, नागालैंड

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	एम. वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक	:	बिज्ञान सुतार
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	अमिताभ कुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	जहान लाल
सहायक संपादक	:	मीनाक्षी
उत्पादन अधिकारी	:	दीपक जैसवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित

» प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

» इस दस्तावेज की आंशिक या समग्र रूप से समीक्षा, सारांश, पुनः उत्पादन अथवा अनुवाद किया जा सकता है लेकिन इसे न तो विक्रय के लिए और न ही किसी व्यावसायिक उद्देश्य के लिए उपयोग में लाया जाए।

» इस पत्रिका की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पत्रिका अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

संपादन मंडल

शैक्षणिक संपादक	उषा शर्मा
संपादन मंडल	कीर्ति कपूर ज्योत्स्ना तिवारी मीनाक्षी खार संध्या सिंह
सहयोग	प्रिति कुमारी अयाज़ अहमद अंसारी पारूल त्यागी अलका दिवाकर
साज-सज्जा	राजेश हांडा, डिजिटल एक्स्प्रेशन्स

सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं के लिए संपर्क करें

उषा शर्मा (शैक्षणिक संपादक)

कक्ष संख्या 307, तीसरी मंज़िल, जी. बी. पंत ब्लॉक

एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग,

नई दिल्ली – 110016

दूरभाष – 011-26592293

ईमेल- firkeebachchonki.ncert@gmail.com

PD 2T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा एजुकेशनल स्टोर्स, एस–5, बुलंदशहर रोड, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट–I गाज़ियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

₹100.00

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
www.ncertbooks.ncert.gov.in/portal
Registration no. DELBIL/2019.77753
ISSN 2582 – 8606

मेले का सफ़र

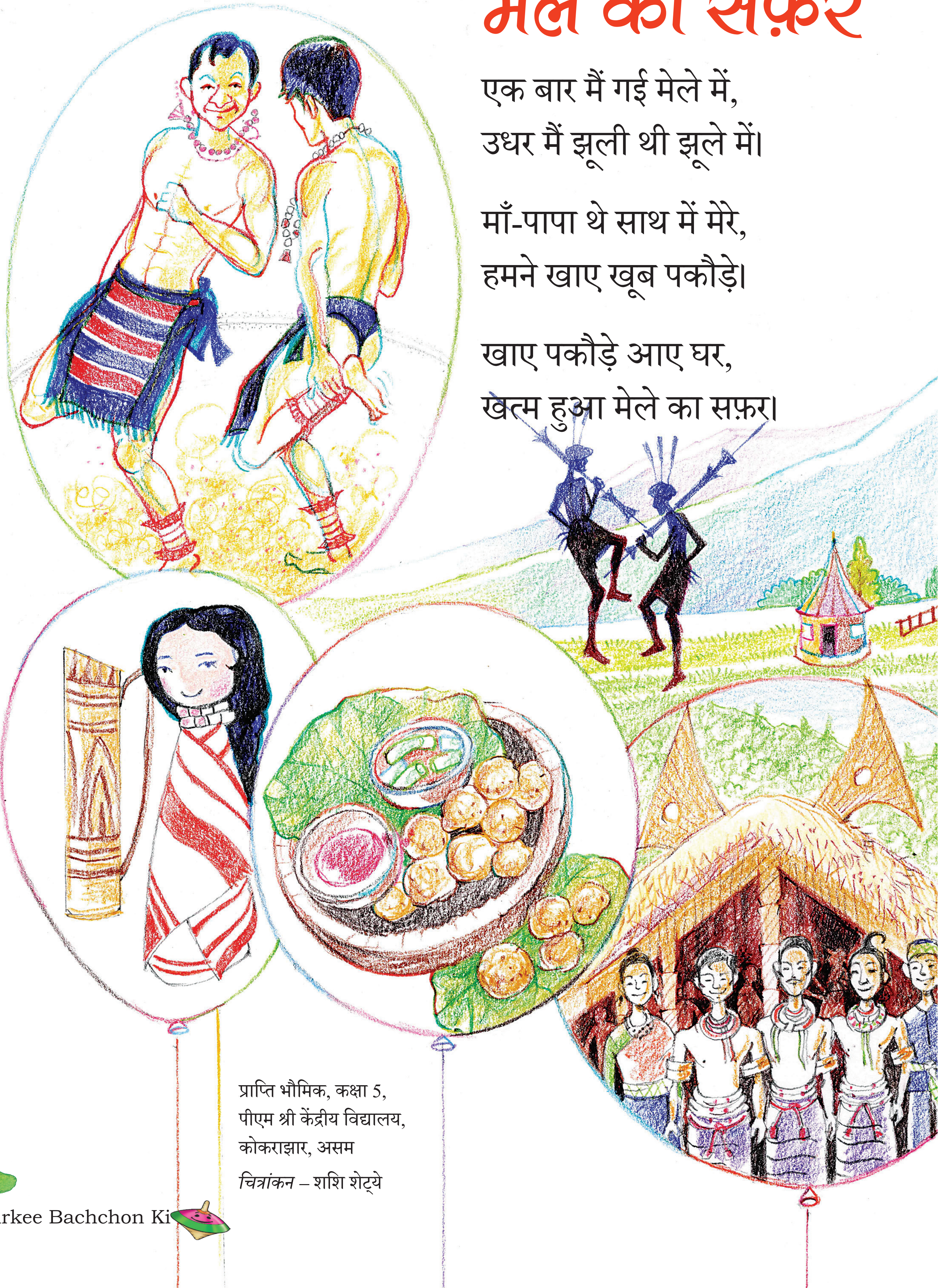

एक बार मैं गई मेले में,
उधर मैं झूली थी झूले में।

माँ-पापा थे साथ में मेरे,
हमने खाए खूब पकौड़े।

खाए पकौड़े आए घर,
खत्म हुआ मेले का सफ़र।

प्राप्ति भौमिक, कक्षा 5,
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय,
कोकराझार, असम

चित्रांकन – शशि शेट्ये